Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

6. वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में मानवीय एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता: एक अध्ययन

ऋचा सिंह
शिक्षिका, उच्च प्राथमिक विद्यालय,सिहुलिया, सुकरौली
कुशीनगर,उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा का मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव होता है। मां-बाप बच्चे के पहले गुरु होते हैं और घर ही बच्चे की पहली पाठशाला होती है। बच्चे को बोलना, बड़ों की सम्मान करना, खाने-पीने और उठने-बैठने का संस्कार अपने घर से ही सीखने को मिलता है। बच्चा जब थोड़ा बड़ा होता है तब उसकी औपचारिक शिक्षा शुरु होती है। अक्षर ज्ञान से शुरु होकर यह औपचारिक शिक्षा डॉक्टरी, इंजिनियरिंग, कला, विज्ञान और वाणिज्य आदि क्षेत्रों में बड़ी-बड़ी डिग्रियों तक पहुंचाता है और समाज में पद-प्रतिष्ठा और जिम्मेदारियों तक पहुंचाता है। इसके पीछे परिश्रम, किस्मत या दोनों का होना माना जाता है। लेकिन जब हम मानवीय एवं मूल्यपरक शिक्षा की बात करते हैं तब हम वैश्विक स्तर पर संपूर्ण मानव जाति को एक दृष्टि से देखते हुए सार्वभौम मूल्यों (प्रेम, अहिंसा, शांति, सद्व्यवहार, ईमानदारी, सच्चाई) की बात करते हैं। वास्तव में यही सार्वभौम मूल्य और मानवीय मूल्यों (प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, भ्रातृत्व, समानता, सहअस्तित्व, करूणा, दया) की समझ ही हर व्यक्ति को एक-दूसरे से भावानात्मक रूप से जोड़कर विश्व परिवार और बंधुत्व के भाव से हमें मानव बनाते हैं। आदर्श और सभ्य वैश्विक समाज के निर्माण के लिए हमें मानवीय मूल्यों की शरण लेनी ही पड़ेगी। पृथ्वी पर रहने वाले सभी फेलो सिटीजन हैं, सभी में कुछ भावनाएं और आशाएं समान हैं चाहे वे किसी भी भू भाग के निवासी हों। यही साझा भाव मानवीय मूल्य है। प्रस्तुत शोध में 'वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में मानवीय एवं मूल्यपरक शिक्षा की अवश्यकता' को रेखांकित किया गया है।

शब्द संकेत- शिक्षा, मूल्य, परिवार, मानवता, कल्याण, देश, विश्व।

प्रस्तावना

मूल्यपरक शिक्षा का प्रत्येक देश-काल में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मूल्यों के साथ जीना ही व्यक्ति को आदर्श व्यक्ति के रूप में स्थापित और प्रमाणित करता है। मानवीय मूल्यों की समझ बनाकर अपने जीवन में इसे आत्मसात करना, साथ ही एक इकाई के रुप में स्वयं को समझकर अपने शरीर और विचारों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण बनाना ही व्यक्ति की सर्वश्रेष्ठ योग्यता होनी चाहिए। इसकी शिक्षा और अनुभव व्यक्ति को तीन माध्यमों से प्राप्त होती है-परिवार, समाज एवं स्कूल-कालेजों के माध्यम से। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी परिवारों की भूमिका में काफी बदलाव आया हैं। ग्रामीण अंचल से लेकर शहरी क्षेत्रों के घरों की कामकाजी महिलाओ की संख्या में अधिक वृद्धि हुई है, वही पुरुषों के कार्य के घंटे भी बढ़े हैं, सफ़लता की दौड़ भावनाओं के आगे बलवती हुई है। जिस कारण से परिवार अपनी इस मूल्य परक शिक्षा के पोषण की भूमिका में असफल हो रहे हैं। एकल परिवारों, शहरी क्षेत्रों में पलायन के कारण घर के छोटे बच्चों को मूल्यपरक शिक्षा की प्राथमिक पाठशाला जो उनका घर होता

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

था उस में काफी बदलाव आया है। इस कारण से वर्तमान स्थिति को देखते हुए अब विद्यालयों और कालेजों को ही बच्चों के मूल्य आधारित शिक्षा का जिम्मा लेने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। जिसमें विद्यालय अहम भूमिका निभाने की ओर एक कदम बढ़ाते हुए नजर भी आ रहे हैं। तमाम स्कूलों में वैल्यू एजुकेशन को स्कूली शिक्षा में विषय के रूप में शामिल करने पर चर्चा चल रही है। हम यदि भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करें तो वेद, उपनिषद एवं मनुस्मृति में भी धर्म और कर्म को मूल्यों से जोड़कर कर्तव्य निर्वहन की बात कही गई है। यहां मूल्यों का ईमानदारी से पालन कराना ही धर्म का लक्षण बताया गया है। जिसे हमारे ऋषि, मुनि, संतों ने कथाओं, आदर्शों, कहानियों के रूप में परंपराओं में ढालने का प्रयास करते रहें हैं। विश्व के सभी पवित्र ग्रंथों में मानवीय मूल्यों को स्थान दिया गया है। प्रस्तुत शोध में नई शिक्षा नीति के आलोक में वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में मानवीय एवं मूल्यपरक शिक्षा की अवश्यकता की पड़ताल करने के साथ ही महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित किया गया है। मानव कल्याण के लिए उपरोक्त विषय की गंभीरता को समझना और शिक्षा के द्वारा खुद के साथ-साथ दूसरों के जीवन में सृजनात्मक बदलाव के लिए इस विषय पर शोध का विशेष महत्व है।

शोध का उद्देश्य

1- भौतिकवादी युग में शिक्षा की दिशा और दशा को समझना।

2- मानव कल्याण के आलोक में वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में मानवीय एवं मूल्यपरक शिक्षा की अवश्यकता को रेखांकित करना।

शोध के प्रश्न

1- शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए और वर्तमान समय में इसका क्या उद्देश्य क्या हो गया है?

2- नई शिक्षा नीति-2020 में मूल्यपरक शिक्षा को बढ़ावा देने वाले बिंदु कौन-कौन से हैं?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में विभिन्न पुस्तकों, नई शिक्षा नीति-2020 और विद्वानों की रायों का अध्ययन किया गया है। इसमें अंतर्वस्तु विश्लेषण शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

मानवीय और मूल्य शिक्षा

शिक्षा का मानव जीवन में अनन्य स्थान है। इसका उच्च स्तर न सिर्फ हमारे पारिवारिक-सामाजिक पहचान को निर्मित करने अपितु सह अस्तित्व और विश्व बंधुत्व को कायम रखने में भी मदद करता है। भारतीय संदर्भ में यह और भी महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि यहां वसुधैव कुटुंबकम् की बात कह कर पूरे विश्व को परिवार मान लिया गया और सर्वे भवन्तु सुखिनः के भाव के साथ सभी के सुखों को महत्त्व देकर वैश्विक समाज के प्रति परिवारभाव को व्यक्त किया गया है। मानवीय शिक्षा में मूल्य शिक्षा एवं स्वयं के शरीर के साथ भाव, विचार को समझने, जानने एवं स्वयं की उपयोगिता समझने में निहित है। मानवतावादी जे. कृष्णमूर्ति शिक्षा में मानवीव शिक्षा को बहुत महत्त्व देते हैं। आपके शब्दों में शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा द्वारा ही इसे अनुचित मार्ग से सदमार्ग पर लाया जा सकता है। कृष्णमूर्ति कहते हैं कि वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य को आत्मज्ञान कराए।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

अतः मन का ज्ञान ही शिक्षा है। जिसे व्यक्ति के रूप में अपने विचारों, भावों, और आत्मचिंतन दृष्टि का ज्ञान न हो फिर वह न स्वयं को समझ सकता है ना ही दूसरों के साथ अपने संबंध को समझ सकता है। फिर ना ही वो प्रकृति को समझ सकता है न ही जीव जंतुओं को। वह जीवन के सकल रहस्यों और आनंद से वंचित रह जाता है। शिक्षा मूल्य ही उन आदर्शों का ध्योतक है जो समाज के व्यक्तियों के लिए मार्ग निर्देशन का कार्य करता है। भारतीय संस्कृति कर्तव्य पर आधारित है। अतः भारतीय संस्कृति में कर्तव्य ही मापदंड है जो व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इन्हें ही मूल्यों का नाम दिया जाता है। कर्तव्यों का पालन करना अच्छे मूल्यों पर आधारित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मूल्य परक शिक्षा

मूल्य शैक्षिक प्रक्रिया के नीति निर्देशक तत्व हैं। शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण जीवन मूल्यों के आधार पर ही होता है। हमारी भारतीय शिक्षा पद्धति प्राचीन वैदिक काल से आधुनिक काल तक मूल्य प्रधान ही रही है। भारत में आदि काल से राजा और प्रजा सबके लिए समान मूल्यों की बात कही गई है। सबके लिए समान कर्त्तव्य पालन को ही मूल्य बताकर राजधर्म , गुरु-धर्म, और मानव-धर्म को आधार बनाकर आचार, विचार और व्यवहार करने की बात कही गई है। आदि काल की गुरुकुल की शिक्षा, भिक्षाटन, आश्रम जीवन सभी प्रकार के लोगों के लिए समानता, गुरु का सम्मान, गुरु भातृत्व भाव ही मूल्य शिक्षा का पोषण करते थे ।

आज के युग में मानव दिशाहीन और भ्रमित प्रतीत हो रहे हैं। उसके आचार, विचार, व्यवहार को निश्चित व नियमित बनाने के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है। आज संपूर्ण विश्व में मूल्य का ह्रास हो रहा है। मूल्यों के ह्रास का तात्पर्य है कि सभी मनुष्य के लिए कल्याणकारी सुखकारी मूल्यों का पालन त्याग कर व्यक्ति सिर्फ अपने सुख के लिए ही कार्य कर रहा है। हम आज पुराने मूल्यों को छोड़ चुके हैं पर नए मूल्यों को भी स्वीकार नहीं किए हैं। मूल्यों के अनुकूल आचरण करने के लिए उनका ज्ञान जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है उसे अपने भाव, विचार, व्यवहार में सम्मिलित करना। आज के युग में जिन व्यक्तियों को मूल्यों का ज्ञान भी है वह भी उसे अपनी भावनाओं से जोड़कर आचरण में नहीं उतार रहे हैं। आज के भारत की परिस्थितियां पुकार-पुकारकर नैतिक मूल्यों के ह्रास की कहानी कह रही हैं। कहीं चोरी, कहीं बलात्कार, कहीं घुसखोरी, कहीं शोषण। सत्यम शिवम सुंदरम के देश में स्थितियां मूल्य शिक्षा की आवश्यकता की उद्घोषणा जोर-जोर से कर रही हैं। मानव सभ्यता व संस्कृति के उत्थान के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है। हर समय संघर्ष मानसिक तनाव, अविश्वास, असुरक्षा की भावना हमें बर्बरता के युग की ओर ले जा रही है। इससे बचने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। विभिन्न आयोग और समितियों ने जब भी शिक्षा के किसी भी स्तर पर विचार किया है। अपने प्रतिवेदन में मूल्य शिक्षा की महती आवश्यकता पर बल दिया है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर सभी एकमत हैं। विभिन्न विषयों के विद्वान विभिन्न मूल्यों को मूल्य शिक्षा की विषय वस्तु के रूप में स्वीकार करते आए हैं। समाजशास्त्र, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों, मानव शास्त्री मानवीय मूल्यों, धर्म शास्त्री धार्मिक मूल्यों, नीति शास्त्री नैतिक मूल्यों को मूल्य शिक्षा की विषय वस्तु बनाना चाहते रहे हैं। भारतीयता के समर्थक भारतीय मूल्यों को गांधीवादी मूल्यों की शिक्षा देने के पक्षधर रहे हैं। कुछ विद्वान उन सार्वभौमिक मूल्यों की शिक्षा देना चाहते हैं जो भारतीय भी हों और मानवीय भी। जैसे सत्य शिव सुंदर के सास्वत मूल्य तथा प्रेम, शांति, अहिंसा। सार्वभौमिक और मानवीय मूल्य मुख्य रूप से शिक्षा में शामिल किए जाने चाहिए।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

समय-समय पर जब मूल्य शिक्षा की चर्चा चली है तो विद्वानों ने मानवीय मूल्य, गांधीवादी मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य और नैतिक मूल्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, एनसीआरटी ने अनेक संगोष्ठियों के आयोजनों के पश्चात 83 मूल्यों की एक लंबी सूची प्रकाशित की थी। इसके साथ यदि हम गांधीवादी मूल्यों की बात करें तो सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रम्हचर्य, अभय, अपरिचिता निवारण कार्यक्रम, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता मूल्यों की शिक्षा में अंगीकृत करने की सिफ़ारिश की गई थी। एनसीईआरटी द्वारा तैयार सूची में दूसरों के सांस्कृतिक मूल्यों की सराहना, दूसरों की चिंता, दूसरों का ध्यान, सहयोग, समानता, अच्छाई, प्रजातांत्रिक निर्णय, व्यक्ति की महत्ता, शारीरिक कार्य का सम्मान, साथी भावना, अच्छे आचरण, राष्ट्रीय समाकलन, आज्ञा पालन, समय का सदुपयोग, ज्ञान की खोज, संयम, करूणा, समानता, लक्ष्य, शिष्टाचार, भक्ति, स्वास्थ्यकर जीवन, अखंडता, सुचिता, निष्कपटता, आत्म नियंत्रण, साधन संपन्नता, नियमितताॅ, दूसरों का सम्मान, वृद्धों का सम्मान, सादा जीवन, सामाजिक न्याय व अनुशासन, स्वसहायता से सम्मान, आत्मविश्वास व समर्थन, स्वाध्याय, आत्म नियंत्रण, समाज सेवा, मानव जाति की एकात्मता, अच्छे-बुरे में विभेद, सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव, स्वच्छता, साहस, जिज्ञासा, अनुशासन, सहनशीलता, समानता, भिन्नता, वफादारी, स्वतंत्रता, दूरदर्शिता, सज्जनता, कृतज्ञता, ईमानदारी, सहायक, मानवतावादी, न्याय, सत्यता, सहिष्णुता, भूमि क्षेत्र सार्वभौमिक प्रेम, राष्ट्रीय जन संपत्ति का महत्व, पहल, दयालुता, जीवों के प्रति दया, धर्म परायणता, नेतृत्व, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय चेतना, अहिंसा, शांति, देशभक्ति, समाजवाद, सहानुभूति, धर्मनिरपेक्षता का भाव, दल भावना, समय की पाबंदी, दल कार्य, और राष्ट्रप्रेम। इस लंबी सूची को अटपटा मानकर एनसीईआरटी ने बाद में स्कूली शिक्षा के लिए पंच मूल सूत्र तैयार किया। यह पांच मूल्य सफाई, सच्चाई, श्रम, समानता व सहयोग हैं। इसके बाद इन मूल्यों की पुनः व्याख्या की गई। मूल्यों पर जिसकी एनसीईआरटी द्वारा व्याख्या की गई है वह कर्तव्य परायणता, राष्ट्र समर्पण, धार्मिक भाषाई व सांस्कृतिक प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, ईमानदारी व सत्यता, और लोकतांत्रिक मूल्य मुख्य रूप से रखे गए।

भारतीय संस्कृति सदैव कर्तव्य प्रधान रही है। रामायण परम पूज्य महा ग्रंथ कर्तव्य परायणता पर आधारित है। इस कर्तव्य परायणता को हमारे समाज ने धर्म के नाम से ही परिभाषित किया था। वर्तमान भारत में सबसे गहन समस्या जिसने पूरे देश को पंगु बना दिया वह बस अपने स्वार्थ की दौड़ है। अपना कार्य करने की है, हर व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति सजग है पर कर्तव्यों के प्रति नहीं। मूल्यों की शिक्षा वास्तव में दी जानी चाहिए तो वह कर्तव्य परायणता ही है।

राष्ट्र के प्रति समर्पण - वर्तमान भारत की सबसे बड़ी समस्या है राष्ट्रीय भावना का अभाव। भारत में प्रत्येक व्यक्ति या तो हिंदू ,मुस्लिम, सिख ईसाई है या फिर बंगाली, बिहारी, मद्रासी, पंजाबी! भारतीय ढूंढने पर ही मिलता है। सिर्फ कुछ विशिष्ट अवसरों पर ही हमारा राष्ट्रप्रेम हिलोरें मारता है जैसे भारत पाक क्रिकेट मैच में या किसी दूसरे देश से युद्ध के अवसर पर अथवा किसी भारतीय युवती के विश्व सुंदरी बनने पर आदि। राष्ट्रीय समर्पण के अभाव में हमारे देश का अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा है। अतः इस मूल्य को भारतीयों के चरित्र में आत्मसात कराने का उत्तरदायित्व शिक्षा का ही है ।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

धार्मिक भाषाई व सांस्कृतिक सहिष्णुता - भारत बहु धर्मी, बहुभाषी अनेक संस्कृतियों वाला देश है। भारत के इस स्वरूप को जीवित रखने के लिए सहिष्णुता की अत्यंत आवश्यकता है। सहिष्णुता ही वह धागा है जो हमारी संस्कृति के भिन्न-भिन्न फूलों को जोड़कर एक माला बनाने का कार्य करता है। इसके अभाव में फूल अलग-अलग बिखर जाएंगे। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि धार्मिक भाषाई व सांस्कृतिक सहिष्णुता के मूल्य व्यक्तियों में रोपित किए जाएं।

प्रेम, सहानुभूति व सहयोग- प्रेम, सहानुभूति व सहयोग ऐसे सामाजिक मूल्य हैं जो सभी समाजों में स्वीकृत व पूज्य हैं। अतः इनका पाठ पढ़ाना भारतीय समाज के एकीकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन मूल्यों के कारण ही हमारा समाज आज तक जीवित रह सका है। अतः इसको दिशा दी जानी चाहिए।

ईमानदारी व सत्यता- ईमानदारी व सत्यता भी ऐसे मानवीय मूल्य हैं जो सभी समाजों व सभी धर्मों में स्वीकार किए जाते हैं। ये मनुष्य को मनुष्यता प्रदान करते हैं। इन मूल्यों को स्वीकार कर गांधी जी महात्मा बन गए। शायद गांधी जी की तरह मूल्यों के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने वाले व्यक्ति आज के युग में व्यवहारिक न माने जाएं, पर इतनी ईमानदार व सत्यता तो प्रत्येक व्यक्ति के अंदर अवश्य होनी चाहिए कि वह अपने आप से आंख न चुरा सके, झूठ भ्रष्टाचार का सहारा लेने वाले व्यक्तियों का विवेक मर जाता है। ईमानदारी व सत्यता के मूल्य वक्त के समय विवेक को जागृत रखते हैं।

लोकतांत्रिक मूल्य- स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, न्याय, समाजवाद व सर्वधर्म समभाव, भारतीय लोकतंत्र के इन 6 मूल्यों को आधारभूत मूल्य के रूप में भारत में विकसित किए जाने की सिफारिश की जा चुकी हैं। भारत में विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मूल्य शिक्षा विद्यालयों में अवश्य हो और यह पाठ्यक्रम के अलावा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी समाहित की जाए।

ज्ञान विज्ञान और मूल्य शिक्षा

वर्तमान में यदि हम अपने समाज, देश और आस-पास के लोगों का ईमानदारी के साथ मूल्यांकन करें तो पाएंगे कि हम सभी का लक्ष्य प्रतियोगिता में जीतना, अच्छे अंक और प्रमाण पत्र पाना रह गया है। यह अंक प्राप्त करना और प्रतियोगिता, रोजगार या व्यवसाय प्राप्त करके धन और संसाधन एकत्र करने पर जाकर समाप्त हो जा रही है। आज शिक्षा बस रोजगारोन्मुखी होती जा रही है। जबकी शिक्षा को रोजगारोन्मुखी होने के साथ-साथ समाजोपयोगी और जीवनोपयोगी भी होना चाहिए। शिक्षा की उपयोगिता तभी है जब वह मनुष्य को सामाजिक रूप से, आर्थिक रूप से, मानसिक रूप से और शारीरिक रूप से सशक्त करे। आज ज्ञान विज्ञान, तकनीकी के विकास ने पूरे ब्रम्हांड और सागर की अतल गहराइयों को अपने परिधि में बांध लिया है लेकिन क्या कारण है कि इसके बावजूद भी हमारी पीढ़ी सन्तुष्ट और खुश नहीं है। वह जीवन मूल्यों से दूर होती गई, जिसने मनुष्य को बस पैसा एकत्र करने की मशीन बना दिया है। इस ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी जागरूकता होने के बाद भी आज का युवा परिवार से दूर हो गया है, भावानात्मक दूरियां बढ़ गईं, आज उसे परिवार, समाज, राष्ट्र और प्राकृति से कोई लगाव और अपनत्व ही नही रह गया है।

निष्कर्ष-

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आज लोग भौतिक सुख सुविधाओं से संपन्न होकर भी संतुष्ट नहीं हैं। जो उनके पास है, उससे खुश नहीं हैं और जो पास नहीं है या दूसरे के पास है उसके पीछे दौड़ने की अभिलाषा ने उनकी खुशी को उनसे दूर कर दिया है। परिणाम यह है कि आज उनका मानसिक स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ रहा है और वह अवसाद, तनाव, कुंठा और हिंसा के शिकार हो रहे हैं। ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ मूल्य शिक्षा की कमी ही है, जिसने विवेकहीनता, अपराध, निराशा, आत्महत्या, कम उम्र में शारीरिक-मानसिक बीमारियां और प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि और संसाधनों की कमी की श्रेणी में समाज को लाकर खड़ा कर दिया है। आज हम अंतरिक्ष में जीवन की संभावनाओं की तलाश कर रहे हैं लेकिन साथ ही प्रकृति को नियंत्रित करने की अनियंत्रित इच्छा से पृथ्वी पर अपने अस्तित्व को खोते जा रहे हैं। आज हम पर्यावरण संकट के मुहाने पर खड़े हैं। कारणों में सबसे मुख्य कारण है कि हमने अपनी जड़ों को छोड़ना शुरू कर दिया। अपनी संस्कृति में समाहित मूल्यों को रूढ़िवादिता का नाम देकर रोबोट जैसे नागरिक बन रहे हैं और प्रकृति को पूजने के भाव को रूढ़िवादी मानते हैं। आज के मशीन, युवा के दिल में किसी के लिए कोई अपनापन, सम्मान, प्रेम, करूणा, ममता का भाव ही नहीं है, अगर है तो सिर्फ सतही उड़ान और स्वहित की कामना। एक तरफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के कारण मनुष्य की जगह मशीनें और रोबोट कार्य कर रहे हैं। दूसरी तरफ जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, बढ़ते प्रदूषण, घटते संसाधनों के कारण जल, भोजन, ऊर्जा, मिट्टी, स्वच्छता जैसी मूलभूत आवश्यकताएं पूर्ण करने के लिए नए रास्तों की जरूरत महसूस की जा रही है।

2015 में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने तथा जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य रखा गया है। वैश्विक परिवर्तन के इस दौर में यह अति महत्वपूर्ण है कि सीखने की प्रक्रिया को सतत बनाया जाए और यह सीखना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में हो। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट करती है कि शिक्षा मनुष्य की पूर्ण क्षमताओं का विकास करे, जिससे एक न्याय संगत और न्याय पूर्ण समाज व राष्ट्र का विकास हो। शिक्षा ऐसे व्यक्ति का विकास करे जो वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय, समानता, वैज्ञानिक प्रगति, राष्ट्रीय एकीकरण और संस्कृति के संदर्भ में भारत को सतत प्रगतिशील बनाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करे। इस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संरचना के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने की दिशा में कदम बढ़ा चुकी है। जिसका लक्ष्य है अच्छे इंसानों का विकास करना, ऐसे इंसान जो तर्कसंगत बुद्धि और कार्य के साथ-साथ करुणा, सहानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक, नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो। यह नीति वर्तमान आवश्यकताओं के संदर्भ में परंपरागत मूल्यों के संवर्धन की व्याख्या करती है। हमारी प्राचीन मूल्य सार्वभौमिक है वो आज भी संसार में हर जगह समान रूप से सत्य और प्रासंगिक हैं। इन मूल्यों से परिपूर्ण उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच को लक्षित किया गया है। यह शिक्षा हमारे देश को ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरु का दर्जा दिलाए, साथ ही राष्ट्र को न्याय संगत जीवंतता प्रदान करें। विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों, मौलिक कर्तव्यों, अपनी जड़ों से जुड़ाव के साथ-साथ परिवर्तनशील वैश्विक स्तर पर वैश्विक नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता विकसित करें। नीति से स्पष्ट है कि विद्यार्थी व्यवहार, बुद्धि, कार्य, ज्ञान, कौशल

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

और मूल्य से भारतीय होने का गर्व महसूस करें और ऐसे वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित हो जो मानव अधिकार स्थाई विकास और जीवन यापन के लिए लोकमंगल की भावना रखें।

व्यक्तित्व के समग्र विकास में सिर्फ ज्ञान और कौशल से व्यक्तित्व निर्माण नही संभव है, बल्कि मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि मूल्य उसे अपने परिवार, समाज, संस्कृति, प्रकृति व राष्ट्र से जोड़ कर रखते हैं। भारत की संस्कृति में परंपरागत रूप से समाहित मूल्य आज के आधुनिक बदलते परिवेश में भी जीवन के अस्तित्व के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं। अतः इन मूल्यों को विद्यालय की संस्कृति में शामिल करते हुए विभिन्न गतिविधियों व शिक्षण शास्त्र के माध्यम से विद्यार्थियों में विकसित किया जा सकता है।

नीति ने शारीरिक मूल्य, संज्ञानात्मक मूल्य, भावनात्मक मूल्य, नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य को विकसित करने में बच्चे को सक्षम बनाने के साथ, तकनीकी विषयों, कौशल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विषयों के साथ नैतिक मूल्यों, मानव व संवैधानिक मूल्यों का ज्ञान व विद्यार्थियों को व्यवहार में विकसित की जाए ऐसी बात कही है। विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम के माध्यम से संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, नागरिक कौशल, पर्यावरण संबंधी जागरूकता, प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण, स्वच्छता, समसामयिकी, स्थानीय समुदाय और राज्यों और विश्व स्तर पर चल रहे मुद्दों के ज्ञान में कौशलों का विकास किया जाए, नीति में ऐसी बात कही गई है।

संदर्भ सूची

1- भारती शिक्षा और उसकी समस्याएं पी डी पाठक
2- उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक डॉ उषा
3- पाटिल योजना 2013 समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका
4- शिक्षा क्या है जे कृष्णमूर्ति
5- रिश्ते क्या है जे कृष्णमूर्ति
6- वैल्यू एजुकेशन विद रेफरेंस NEP 2020
7- मध्यम दर्शन मानवीय शिक्षा ए नागराज
8-चेतना विकास प्रणेता ए नागराज
9- वेब स्रोत

***